पद १२६

(राग: खमाज जिल्हा - ताल: धुमाळी)

ऐका तुम्हीं संत अनाथाच्या बोला। तुम्हीं अवतरला जगकल्याणा।।१।। ऐकणें पाहणें बोलणें चालणें। उपजणें मरणें चेतनशक्ति।।२।। योग भक्ति ज्ञान प्रेम आलिंगन। सिद्धि ओळंगणें शक्ति चेतनाची।।३।। शरीरा चेतवी भक्तिभाव दावी। अनंत लाघवी चेतन आत्मा।।४।। देवा विसरावें नाशिवंत ध्यावें। जनीं मिरवावें जाणीव आपुली।।५।। नथ दिल्या वंदा नाक दिल्या निंदा। अज्ञानाचा धंदा सोडवी देवा।।६।। अन्य मतीं द्वेष वरी भजन घोष। सर्वांतरी ईश वेद मुखि ज्ञापी।।७।। सकलमती व्हावें सर्वांशी वंदावें। आत्मा ओळखावे क्षणोक्षणीं।।८।। ज्ञानमार्ताण्ड हा सर्वां मनीं स्फुरला। धन्य तो पावला सहज मुक्ति।।९।।